A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 02, July-December 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में बजने वाली देवतालें

Dr. Mritunjay Sharma[1], Chiranji Lal[2]

1 Assistant Professor & PI, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Summer Hill, Shimla
2 Research Assistant, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Summer Hill, Shimla

सार

हिमाचल प्रदेश अपनी लोक संस्कृति और सभ्यता के लिए भी जाना जाता है. इसके अलावा, यह विश्व भर में मन्दिरों, मेलों, लोक गायन, वादन और नृत्य के लिए भी जाना जाता है। देवी-देवताओं से भरा हुआ हिमाचल प्रदेश इसलिए देवभूमि कहलाता है। मानव समाज का सबसे प्राचीन रूप लोक संगीत है। लोग इस संगीत को खुद बनाते हैं। लोगों द्वारा लोगों के लिए लोक संगीत गाया जाता है। यह संगीत किसी भी क्षेत्र विशेष के लोगों के मन की भावनाऐं दर्शाता है। इस संगीत से आसानी से किसी भी समाज की संस्कृति और सभ्यता को समझा जा सकता है। लोक संगीत एक ऐसी धरोहर है, जो लोक जीवन का अतीत दिखाता है। संगीत मूल रूप से वाद्य शब्द से जुड़ा है जो लय को नियंत्रित करने के लिए गायन या नृत्य के साथ या अकेले वादन के रूप में प्रयोग किया जाता है। धर्म हमारी संस्कृति के हर हिस्से से जुड़ा हुआ है। हिमाचल प्रदेश में लोकगीत, लोकनृत्य और लोकताल का विशेष महत्व रहा है। लोकतालों के बिना कोई लोकगीत या लोकनृत्य संभव नहीं है। इन्हीं पारंपरिक लोक तालों को हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में विभिन्न वाद्य यंत्रों पर बजाया जाता है। जैसे विभिन्न पर्व, अन्य शुभ अवसर, मेले उत्सव आदि। साथ ही, मौत के समय कुछ तालें बजाई जाती हैं। लोक तालों के वादन के साथ देवी देवताओं का आह्वान, पूजा आदि भी होता है। धीरे-धीरे इन पारंपरिक लोक तालों की वादन शैलियों और इन्हें बजाने वाले कलाकारों की कमी हो रही है। पश्चिमी संगीत के प्रभाव और युवा पीढ़ी में इन तालों के प्रति कम रुचि के कारण यह तालें धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही हैं। हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में यह तालें अलग-अलग मात्राओं की होती हैं, जिन्हें ढोल, नगाड़ा आदि वाद्यों पर अन्य पारंपरिक लोक वाद्यों जैसे शहनाई, करनाल, रणसिंघा आदि के साथ बजाया जाता है।

मुख्य शब्द: *हिमाचल प्रदेश, लोक संगीत, देवताल, पाची ताल, गरनी ताल, जड़भरत ताल, बढार ताल, बटवाल ताल, जागरा ताल।*

भूमिका

भारत विश्व भर में अपनी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और परंपराओं के लिए जाना जाता है। भारत की संस्कृति बहुत पुरानी है। भारतवर्ष के उत्तर में ऊंची-ऊंची धवल पर्वतमालाओं से घिरा हुआ, श्वेत हिमशिखरों से घिरा हुआ, घने देवदारों और स्वच्छ कलकल निनादिनी नदियों की मादकता से भरपूर, बहुत सुंदर और मनमोहक स्वर्णिम भूखंड है। यह कैलाश पर्वत के पावन आंचल में स्थित है और चारों ओर से ऊंची-ऊंची पर्वतमालाओं और शिवालिक पहाड़ियों की बाहरी श्रेणियों से गिरा हुआ है। देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध हिमाचल प्रदेश हिमाचल प्रदेश की धार्मिक और ऐतिहासिक समाजिक संस्कृति एक अलग पहचान बनाए हुए है। हिमाचल प्रदेश अपनी लोक संस्कृति और सभ्यता के लिए भी जाना जाता है. इसके अलावा, यह विश्व भर में मन्दिरों, मेलों, लोक गायन, वादन और नृत्य के लिए भी जाना जाता है। देवी-देवताओं से भरा हुआ हिमाचल प्रदेश इसलिए देवभूमि कहलाता है।

हिमाचल प्रदेश की संस्कृति उतनी ही पुरानी है जितना कि मानव। लोगों की धार्मिक भावना पर अटूट विश्वास है। हिमाचल के लोगों की पहचान यही निष्ठा और आस्था है। हिमाचल प्रदेश के लोग भारत के किसी भी अन्य राज्य में जाएं तो वहां के लोगों से बातचीत करते हैं और उनके विचारों से पता लगाते हैं कि वे हिमाचल प्रदेश में रहने वाले हैं। हिमाचल प्रदेश के लोगों में यही विनम्रता और विश्वास है। हिमाचल के ग्रामीण लोगों का देवी-देवताओं पर इतना अटूट विश्वास है कि वे छोटे-छोटे झगड़ों को उनके पास जाकर सुलझाते हैं। छोटे गांवों से लेकर बड़े शहरों तक, विभिन्न स्थानों पर देवताओं की स्थापना की गई है। हर क्षेत्र और हर गांव में अपने देवता हैं। इन देवताओं को वंश-दर-वंश पूजा जाता है। हिमाचल प्रदेश में किसी भी मेले, त्यौहार या अन्य शुभ कार्य में सबसे पहले देवी-देवताओं का पूजन किया जाता है।

हिमाचल प्रदेश में बहुत साधारण रिवाज हैं। जन्म से मृत्यु तक प्राय: शास्त्रों के अनुसार ही संस्कार किए जाते हैं। जन्मदिनों, विवाहों और अन्य समारोहों पर लोकगीतों, लोकवाद्यों और लोकनृत्यों का प्रदर्शन विशेष रूप से किया जाता है। यहां के लोग जादू-टोने और स्थानीय इलाज का उपयोग करते हैं।

लोक संगीत

मानव समाज का सबसे प्राचीन रूप लोक संगीत है। लोग इस संगीत को खुद बनाते हैं। लोगों द्वारा लोगों के लिए लोक संगीत गाया जाता है। यह संगीत किसी भी क्षेत्र विशेष के लोगों के मन की भावनाऐं दर्शाता है। इस संगीत से आसानी से किसी भी समाज की संस्कृति और सभ्यता को समझा जा सकता है। लोक संगीत एक ऐसी धरोहर है, जो लोक जीवन का अतीत दिखाता है। 'लोक' लोकगीतों में बसता है। जब तक लोक मानस, लोक चिन्तन, लोक भावना, और लोक दृष्टि जीवित रहते हैं, लोक संगीत जीवित रहता है और हर मन को प्रसन्न करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोक संगीत बहुत व्यापक है। ग्रामीण लोक संगीत में बहुतायत में स्त्रियों का हस्तक्षेप होता है और यह बहुत निर्मल, मार्मिक, निश्च्छल और स्वछन्द होता है। लोक संगीत वाणी के माध्यम से विकसित हुई सांगीतिक परंपरा का परिणाम है। लोक संगीत को एक विशेष समुदाय ने बनाया है जो कलापूर्ण संगीत और लोकप्रियता से अप्रभावित था। लोक संगीत में लोक गीत, लोक नृत्य, लोक वाद्य और लोकनाट्य इत्यादि सभी शामिल हैं।

लोक वाद्य

संगीत मूल रूप से वाद्य शब्द से जुड़ा है। "वाद्य" एक विशेष यन्त्र है जो संगीतात्मक ध्वनि बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है, जो लय को नियंत्रित करने के लिए गायन या नृत्य के साथ या अकेले वादन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह कहा जा सकता है कि "वदति इति वादयम" अर्थात जो बोलता है वही वाद्य है। धर्म हमारी संस्कृति के हर हिस्से से जुड़ा हुआ है।

हिमाचल प्रदेश की स्थानीय संस्कृति और संगीत में लोकवाद्य का गहरा संबंध है। यहाँ पारंपरिक रूप से प्रयोग में चले आ रहे विभिन्न लोक वाद्य अपनी रचना, आकृति, वादन विधि, और वादन अवसरों आदि की विशेषता लिए हुए हैं। लोक गीतों और नृत्यों द्वारा ग्रामीण जनमानस की भावनाओं को व्यक्त करने में यह लोक वाद्य महत्वपूर्ण हैं। इसमें बूढ़े, बच्चे, नौजवान और स्त्रियां सबके पाँव थिरकने के लिए मजबूर हो जाते हैं जब इन वाद्यों की परंपरागत सुरीली धुनें वातावरण में गुंजायमान होती हैं, विशेष मेले-त्यौहार उत्सवों, मांगलिक अवसरों और पारंपरिक लोक गायन के समय। यहाँ के मेले, उत्सव, लोकगीत और मांगलिक कार्यक्रम लोक वाद्यों के बिना पूरे नहीं लगते। इन लोक वाद्यों को उनकी बनाबट और वादन की विधि के अनुसार विभाजित किया जा सकता है। पुरानी पुस्तकों में वाद्यों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित करने के कई तरीके बताए गए हैं। महर्षि भरत ने नाटयशास्त्र में वाद्यों को चार भागों में बांटा है। उन्होने इन चार भागों को तत वाद्य (तन्त्री), अवनद्ध वाद्य, घन वाद्य और सुषिर वाद्य के रूप में वर्गीकृत किया है। आधुनिक विद्वानों और आचार्यों ने महर्षि भरत द्वारा बताए गए इस वर्गीकरण को बिना किसी सवाल के स्वीकार किया है। यही कारण है कि वर्तमान लोकवादियों को उपरोक्त वर्गीकरण के आधार पर ही आसानी से वर्गित किया जा सकता है।

लोक तालें

हिमाचल प्रदेश में लोकगीत, लोकनृत्य और लोकताल का विशेष महत्व रहा है। लोकतालों के बिना कोई लोकगीत या लोकनृत्य संभव नहीं है। इन्हीं पारंपरिक लोक तालों को हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में विभिन्न वाद्य यंत्रों पर बजाया जाता है। यह अवसर है कि आप देवताओं के लिए कुछ कर सकते हैं, जैसे विभिन्न पर्व, अन्य शुभ अवसर, मेले उत्सव आदि। साथ ही, मौत के समय कुछ तालें बजाई जाती हैं। लोग इन्हीं लोक तालों पर नृत्य करते हैं। लोक तालों के वादन के साथ देवी देवताओं का आह्वान, पूजा आदि भी होता है। धीरे-धीरे इन पारंपरिक लोक तालों की वादन शैलियों और इन्हें बजाने वाले कलाकारों की कमी हो रही है। पश्चिमी संगीत के प्रभाव और युवा पीढ़ी में इन तालों के प्रति कम रुचि के कारण यह तालें धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही हैं। हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में यह तालें अलग-अलग मात्राओं की होती हैं, जिन्हें ढोल, नगाड़ा आदि वाद्यों पर अन्य पारंपरिक लोक वाद्यों जैसे शहनाई, करनाल, रणसिंघा आदि के साथ बजाया जाता है।

पाची ताल

हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला, सोलन, सिरमौर में 'पाची' देव तालों के साथ बजने वाली एक प्राचीन ताल है। जो प्रातःकाल में पूजा के साथ बजता है। मंगलामुखी जाति के कलाकार देव वाद्यों पर पाची ताल बजाते हैं, जो मुख्य रूप से ढोल और नगाड़े पर बजाया जाता है, जब सुबह मंदिर में पुजारी पूजा करने जाते हैं । इस ताल में चार अलग-अलग ताले बजते हैं। पाची ताल की पहली ताल 13 मात्रा में बजाई जाती है, दूसरी ताल 16 मात्रा में, तीसरी ताल चार मात्रा में और चौथी ताल 8 मात्रा में बजाई जाती है। उदाहरण के लिए 13 मात्रा की पाची ताल का बोल इस प्रकार है।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 02, July-December 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

पाची ताल–1 (13 मात्रा)

1	2	3	4
धाऽघेघेनड़धाऽ	धाऽधाऽनाऽणाऽ	घेऽघेऽधाऽनग	नगधाऽनगनग
5	6	7	8
धाऽनगधाऽधाधा	धाऽनगधाऽधाऽ	नऽगऽधाऽधाऽ	नगनगधाऽधाऽ
9	10	11	12
नाऽधाऽधाऽनड़	नड़धाऽधाऽधाऽ	धाऽनड़नड़धाऽ	धाऽधाऽधाऽधाऽ
13			
किऽटऽधाधागेऽ			

पाची ताल–2 (13 मात्रा)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
तां	तां	तां	तां	घिडनग	झां घिना	झां घिना	झांण	झांण	घिडनग	नग	नग	नग	नग	घिणान	तांऽ
X				2				0				3			

गरनी ताल

हिमाचल प्रदेश के जिला सिरमौर में गरनी ताल स्थानीय देवी देवताओं की पूजा के दौरान बजाई जाने वाली प्राचीनतम व प्रख्यात ताल है। जिसको हिमाचल प्रदेश के बारह जिलों में अलग -अलग नाम से जाना जाता हैं जैसे गुरताल, हुमकडी, देवता खेल ताल इत्यादि यह ताल 8 मात्रा की ताल है जिसको बजाने से देवता के माली या गूर के अंदर देवी देवताओं की शक्तियों का वास होता है। यह ताल मुख्य रूप से तभी बजाई जाती है, जब देवी देवताओं को प्रकट करना होता है स्थानीय भाषा में इस ताल को गरनी ताल के नाम से जाना जाता है। हिमाचल प्रदेश के अधिकांश देवालयों में इसी ताल का वादन किया जाता है। इस ताल के बोल निम्न प्रकार से हैं।

x			
1	2	3	4
झाँऽणाऽ	नाऽघिड़	झाँऽणाऽ	तागेनाऽ
0			
5	6	7	8
झाँऽणाऽ	ताऽगिड़गिड़	झाँऽणाऽ	तागेनाऽ

जड़भरत ताल

हिमाचल प्रदेश के देव तालों में जड़भरत ताल एक विख्यात ताल है। जड़भरत ताल के वादन के द्वारा देवताओं का आवाहन किया जाता है। मंगलामुखी जाति के प्रसिद्ध कलाकारों का मत है कि जड़भरत ताल का वादन पहली बार सतयुग में हुआ था। इस ताल में 10 मात्राएं होती है जिसको बजाने से पहले ''बखाणा या बरमांवा'' सुनाया जाता है जिसके बोल कुछ इस प्रकार से है।

"जड़ का नाम जड़ भरता, गोभ का गोविंद, शेब का शक्ति, पात की पार्वती"

बरमांवा सुनने के बाद 10 मात्रा की जड़भरत ताल का वादन किया जाता है, जिसके बोल इस प्रकार है।

"जड़ का नाम जड़ भरता, गोभ का गोविंद, शेब का शक्ति, पात की पार्वती"

बरमांवा सुनने के बाद 10 मात्रा की जड़भरत ताल का वादन किया जाता है, जिसके बोल इस प्रकार है।

"जड़ का नाम जड़ भरता, गोभ का गोविंद, शेब का शक्ति, पात की पार्वती"

बरमांवा सुनाने के बाद जड़भरत ताल का वादन किया जाता है यह ताल 10 मात्रा की ताल है इसके बोल इस प्रकार से है

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
झाँऽ	नाऽ	झाँऽ	नाऽ	झाँऽ	झाँऽ	नाऽ	झाँऽ	झाँऽ	नाऽ
x		**2**		**3**			**4**		

बढार ताल

हिमाचल प्रदेश में, विशेष रूप से शिमला व सिरमौर में, देवी-देवताओं के स्वागत में बजाया जाने वाले तालों में बढार ताल एक प्रसिद्ध ताल है। इन जिलों में मंगलामुखी जाति के कलाकार सामूहिक रूप से अपने प्राचीन वाद्यों पर इस ताल का वादन करते हैं जब देवता अपने बढार या मंदिर से देव यात्राओं पर निकलते हैं। गांव के सभी लोग देवताओं की पालकी पर फूलों से उनका स्वागत करते हैं। यह ताल छह मात्रा में बजाया जाता है और इसके बोल कुछ इस प्रकार है।

1	2	3	4	5	6
घि ना नाऽ	ना ना ना	घि ना ना	तां ऽ	नग नग	नग नग
x			**0**		

बटवाल ताल

देवी देवताओं की देव यात्रा में बजने वाली बटवाल ताल हिमाचल प्रदेश के सिरमौर और शिमला में एक विशेष ताल है। देवी-देवताओं की यात्राएं अलग-अलग अवसरों पर की जाती हैं, जैसे जागरण, किसी के घर में विशेष आयोजन, मेले, त्योहार आदि। मंगलामुखी जाति के कलाकार देवी यात्रा निकालते समय बटवाल ताल का वादन करते हैं। बटवाल में दस मात्रा की ताल है। इस ताल के बोल कुछ इस प्रकार है।

1	2	3	4	5
झाऽगेऽ	ताऽऽऽ	ऽऽऽऽ	झाँऽगेगे	झाँऽगेगे
x		2		
6	7	8	9	10
झाऽगेऽ	झाँऽगेगे	झाँऽगेगे	झागेऽगेऽ	तांऽऽऽ
0		3		

जागरा ताल

हिमाचल प्रदेश में जागरा ताल एक प्रसिद्ध ताल है।, इस ताल का वादन देव यात्रा के साथ किया जाता है। हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक जिले में जागरण, विशू मेला, पंचमी भुण्डा, बकरीद आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिसमें देवी देवताओं की देव यात्रा निकाली जाती है। मंगलामुखी जाति के कलाकार देवी देवताओं की पालकी से आगे चलते हुए जागरा ताल का वादन करते हैं, इस ताल में आठ मात्राएं होती हैइसके बोल कुछ इस प्रकार से है।

1	2	3	4
नड़ेऽन	नाऽघिड़	ताऽताऽ	घिऽनाऽ
x			
5	6	7	8
नड़नड़	नाऽघिड़	ताऽताऽ	घिऽनाऽ
0			

उपसंहार

हिमाचल के लोक संगीत में लोक तालों का भी विशेष महत्व है। यह लोक तालें विभिन्न प्रकार की लयों में बजाई जाती है तथा यह अलग-अलग मात्राओं में निबंद्ध होती हैं। कुछ तालें केवल देवता के लिए बजाई जाती हैं और कुछ तालें साधारण नृत्य या गीत के साथ बजाई जाती हैं। पारंपरिक तालों को विशेष रूप से प्रशिक्षित लोग ही बजाते हैं। देवता के साथ वाद्यों पर देव तालें बजाने वाले लोग पीढ़ी दर पीढ़ी इस प्रथा को निभाते हैं। इन तालों में पाची ताल, गरनी ताल, जड़भरत ताल, बढार ताल, बटवाल ताल, जागरा ताल, जंगताल इत्यादि तालें शामिल है। वाद्यों पर इन तालों को कलाकार विभिन्न लयकारियों के साथ प्रदर्शित करते हैं। इन तालों को एकल वाद्य पर या सामूहिक रूप से बजाया जाता है।

संदर्भ

शर्मा, राजीव (2019). हिमाचल प्रदेश के अवनद्ध वाद्य तथा वादन शैलियां. सत्यम पब्लिकेशन्ज, दिल्ली
जस्टा, हरिराम (1978). हिमाचल प्रदेश के लोक नृत्य, संमार्ग प्रकाशन दिल्ली।
ठाकुर, सूरत (1996). हिमाचल प्रदेश के लोक वाद्य, अभिषेक पब्लिकेशन्ज, दिल्ली।

साक्षात्कार

ड़ॉ. राजीव शर्मा, कोटला, सोलन। 20 नवंबर 2025।
श्री अशोक कुमार, आनी, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश। 28 नवंबर 2025।
श्री ठाकुरसेन, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश। 13 जनवरी 2026।
श्री राजेश, बाड़ीधार, अर्की, सोलन, हिमाचल प्रदेश। 05 नवंबर 2025।